प्रकाशन : 6/2015

ऐमू पालन

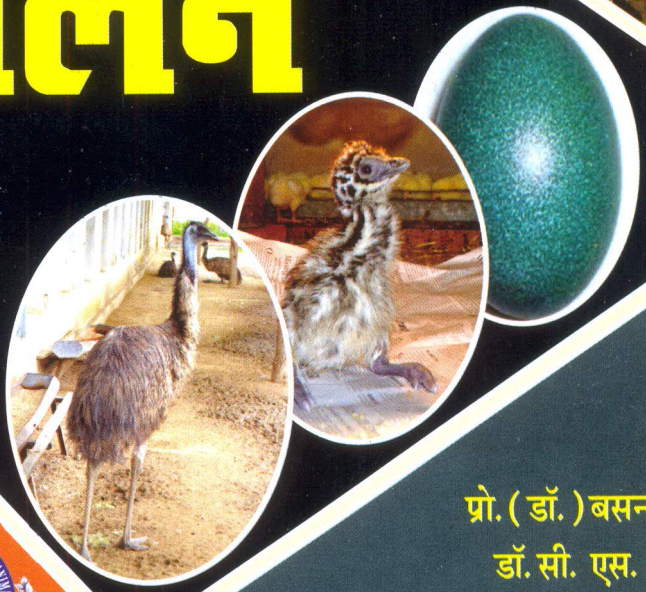

प्रो. (डॉ.) बसन्त बैस
डॉ. सी. एस. ढाका

RAJASTHAN UNIVERSITY OF VETERINARY AND ANIMAL SCIENCES
BIKANER

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।

विविध पशुधन उत्पादक प्रणालियों को अपनाकर कृषि आय बढ़ाने के लिए प्रेरणा हेतु सजीव प्रदर्शन नमूनों की स्थापना

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

ऐमू (*ड्रोमियस नोवेहोलेण्डी*) शुतुरमुर्ग के बाद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा पक्षी है, जिसकी ऊँचाई 5–6.0 फीट और वजन 80–100 पाँण्ड होता है। यह ऑस्ट्रेलियन पक्षी है। इस पक्षी की बहुत अच्छी समतापिक योग्यता होती है (0–50 डिग्री सेल्सियस तापमान) यह पक्षी अत्यधिक ताप सहन करने और तापीय नियमन का गुण भी रखता है। ऐमू पालन इसके अण्डो माँस, तेल और चमड़े के लिये किया जाता है, यह पक्षी अपने दुबले माँस, तेल के लिये बहुत प्रसिद्ध है। जो कि प्रतिसूजकीय एवम् प्रतिआक्सिकरण आदि गुण रखता हैं। ऐमू पालन कृषि का पूरक है जो कि निकट भविष्य में अत्यधिक लाभांश वाला व्यवसाय सिद्ध होने जा रहा है। ऐमू पालन का दक्षिण भारत में बहुतायत से प्रचलन है लेकिन उत्तरी भारत में भी इसका प्रचार–प्रसार बहुतायत से हो रहा है।

ऐमू की शारीरिक विशेषताएँ :-

जब ऐमू का चूजा अण्डे से बाहर आता है तो उसके शरीर पर धारियाँ बिल्कुल गिलहरी के समान होती है परन्तु जब वह वृद्धि करके लगभग 3 महीनें की उम्र के आस–पास होता है तब ये धारियाँ काले भूरे पंखों में रूपान्तरित हो जाती है,ऐमू जिसकी ऊचाई 6 फीट, लम्बी गर्दन और बाल रहित सिर, अब यह एक वयस्क ऐमू कहलाता है, जिसका वजन 35–40 किलो होता है, इस पक्षी की टाँगें लम्बी और पपड़ीनुमा चमडी (शल्क) से ढकी होती है तथा प्रत्येक पैर में तीन अँगुलिया होती है। ऐमू का पूरा शरीर गर्दन के अलावा, लम्बे घने पंखों से ढका होता है। ऐमू का जीवनकाल 25–30 वर्ष का होता है।

ऐमू का प्रजनन :-

ऐमू 18–24 महीनों में अपनी पूर्ण लैंगिक परिपक्वता को प्राप्त करता है, ऐमू का प्रजनन प्रायः सर्दी के मौसम में होता है (भारत में अक्टूबर से अप्रेल तक)। ऐमू प्रायः जोड़े में पाया जाता है (एक नर एवम् एक मादा)। प्रजनन काल में मादा नर के साथ समागम करती है और अण्डे देती है। एक वयस्क ऐमू 3 साल के पश्चात् अपने प्रजनन काल में (अक्टुबर से अप्रैल) औसतन 15–20 अण्डे देता है। ऐमू के अण्डे का रंग हरा तथा वजन में 450–650 ग्राम का होता है।

वयस्क ऐमू का आवास एवं खान-पान/भोजन :-

ऐमू खुले बाड़े में रखे जाते है 50 जोड़े ऐमू की यूनिट के लिये 250 X 160 फीट (40,000 फीट) जगह लगती है। यह जगह 2 X 2 चैनलिंक जाली की 6–7 फीट ऊँचा इन्क्लोजर (पिंजरे) में ऐमू को रखा जाता है। ऐमू को भोजन, भोजननलिकाओं के द्वारा दिया जाता है जो कि सामान्यतया, चैनलिंक बाड़ से लटके रहते है। ऐमू को पानी अच्छे निकास वाले, विशेष रूप से तैयार किये गये टैंको या नलियों से दिया जाता है। ऐमू का प्राकृतिक भोजन कीडे, पत्तियाँ, चारा है। ऐमू कई प्रकार की सब्जियाँ और फल जैसे–गाजर, ककड़ी, पपीता आदि भी खाता है। ऐमू को भोजन दिन में दो बार और पानी उसकी आवश्यकता अनुसार देते है।

ऐमू के उत्पाद :-

❖ **माँस :-** यह लाल रंग का 98 प्रतिशत वसा रहित, माँस होता है जोकि अन्य पशु जैसे–गाय, भेड़, हिरण आदि के माँस की तरह दिखाई देता है ऐमू का माँस विटामिन सी और आयरन (लोह) युक्त होता है। चूंकि ऐमू का माँस कम वसा वाला होता है और यह जल्दी नमी छोड़ता है इसलिये यह नमीयुक्त पकाव के लिये अच्छा होता है।

ऐमू के भोजन की अनुसूची :-

पोषण	स्टार्टर	ग्रेवर	फिनीशर
मेटाबॉलाइजेबल ऊर्जा प्रति किलोकेलोरी प्रति किलोग्राम	2685	2640	2860
क्रूड प्रोटीन (प्रतिशत में)	22	20	17
मेथिओनिन (प्रतिशत में)	0.48	0.44	0.38
लाइसिन (प्रतिशत में)	1.10	0.94	0.78
कच्चे फाइबर (प्रतिशत में)	6–8	6–8	6–7
कैल्शियम (प्रतिशत में)	1.5	1.3	1.2

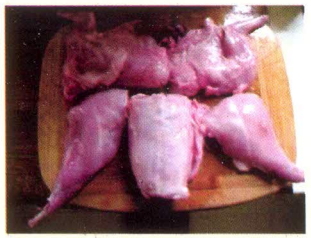

❖ **तेल :-** ऐमू का तेल सफेद अर्द्धठोस होता है जो कि सामान्यतया इस पक्षी के पीछे के भाग की तरफ जमा होता है। जब इसे शुद्धिकृत किया जाता है तो यह पारदर्शी तरल की तरह हो जाता है। ऐमू के तेल का मुख्य उपयोग विभिन्न बिमारियों जैसे जोड़ों के रोग, सोरायसिस मसल्स पैन, त्वचीय रोग जैसे एग्जीमा, बालों का झड़ना आदि रोगो के लिये यह रामबाण औषधि होती है, यह सौन्दर्य प्रसाधन जैसे क्रीम, साबुन, शैम्पू आदि में बहुतायत से उपयोग होता है।

❖ **त्वचा :-** एक वयस्क ऐमू पक्षी से सामान्यतया 6–8 वर्ग फीट अच्छी किस्म की त्वचा प्राप्त कर सकते है जो कि चमड़े के विभिन्न प्रकार के उत्पादों एवम् परिधानों को बनाने के काम आती है। इस पक्षी के पैर की त्वचा शल्कों की उपस्थिति के कारण अद्वितीय होती है जो कि चाकू, तलवार आदि के रक्षात्मक कवच के रूप में उपयोग होती है।

❖ **पंख :-** ऐमू के पंख नरम व शाखाकृत होते है इसलिये इनका उपयोग विभिन्न प्रकार के ब्रुश, सौन्दर्यकरण आदि में बहुतायत से होता है।

❖ **अण्डे :-** ऐमू एक साल में 20–40 अण्डे देता है, इस पक्षी से हम 20–25 साल तक अण्डे प्राप्त कर सकते है। एक अण्डे का वजन 450–650 ग्राम होता है इसका रंग पन्ने जैसा हरा होता है जो कि खाने, सजावट एवम् विभिन्न प्रकार के महंगे उपहार / मेमेन्टॉज आदि में उपयोग किया जाता है।

स्वास्थ्य देखभाल प्रबंधन :-

ऐमू एक अच्छी प्रतिरोधक क्षमता रखता है। ऐमू में मृत्युदर एवम् स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ मुख्यतः चूजों और कम उम्र के ऐमूओं में ही होती है। ऐमू में सामान्यतयाः भूख, कुपोषण, आंतों में रूकावट, पैरों में असमान्यतया, कोलाई और क्लोस्ट्रीडियम संक्रमण आदि होते है अन्य बिमारियाँ

जैसे रहाईनाइटिस, कैन्डीडियोसिस, साल्मोनिला, एसपरजीलॉसिस, कॉक्सिडियोसिस एवम् परजीवी संक्रमण आदि है। ऐमू को आंतरिक एवम् बाहय् कीडों से बचाने के लिये एक माह की उम्र से ही आइवरमैक्टिन एक–एक महीने के अंतराल से लगायी जाती है। सभी पक्षी एक सप्ताह की उम्र में रानीखेत बिमारी के लिये पहले से ही टीकाकृत कर दिये जाते है (लासोटा टीका)। एक पक्षी की तंदुरूस्ती के लिये बी काम्पलैक्स और मल्टीविटामिन का उपयोग समय–समय पर करते रहना चाहिये।

-: तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभार :-

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत, कुलपति
राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. बी. के. बेनीवाल, अधिष्ठाता
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर

प्रो. एस. सी. गोस्वामी, विभागाध्यक्ष
पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर

-:: सम्पर्क सूत्र ::-

प्रो. बसंत बैस
डॉ. सी. एस. ढाका
9414328437
पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग
सी.वी.ए.एस.
राजूवास, बीकानेर

Under CSA-RKVY-1(15) Project

Establishment of Live Demonstration Models of Diversified Livestock Production Systems For Motivating Adaption To Enhancing Agricultural Income

मुद्रक : डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, बीकानेर # 9784105819